लेखक-परिचय :

नाम : सुर्शीद आलम

जनम-अस्थान : उपहारा, औरंगाबाद

ई परगतिसील चेतना के कहानीकार हथ। इनकर मगही कहानी पत्र-पतरिका में छपित रहल हे।

'नईम मास्टर के दुस्मन' कहानी साम्प्रदायिकता पर कड़ा परहार करऽ हे। ई कंहानी में बतावल गेल हे कि अल्पसंख्यक समाज भी जब जमतगर हो जा हथ तो हुआँ उनकर सामंतवाद गरीब वर्ग के सतावऽ हे, दबावऽ हे, सोसन करऽ हे। असली फरक गरीब-अमीर के होवऽ हे।

नईम मास्टर एगो दरजी हथ। हिन्दू गाँव में ऊ सुख-सान्ति से रहित हथ। उनका काफी सम्मान आउ आदर भी मिलल हे बाकि जब ऊ मुसलिम बहुल गाँव में मकान बना के रहे लगऽ हथ तऽ उहाँ उनका जादे परताड़ना झेले पड़ऽ हे तब उनका लगऽ हे कि ऊ भल्ले अल्पसंख्यक हथ बाकि उनका हिन्दू बहुल गाँव में ही जादे इज्जत मिलऽ हल। उनका समझते देर न लगल कि साम्प्रदायिकता के फगड़ा जान-बूझ के खड़ा करल गेल हे। अदमी-अदमी के बीच फूट डालेला धरम के हथियार बनावल जा हे। असली फरक अमीरी आउ गरीबी के हे।

नईम मास्टर के दुस्मन

नाम उनकर नईम मियाँ हइन, बाकि सब लोग प्यार से उनका नईम मास्टर कहऽ हथिन। नईम मास्टर पढ़ावेवला मास्टर न हथिन बलुक टेलर मास्टर हथिन। सुभाव के जइसन सीधा हथिन ओइसहीं इनकर काम भी सीधा-सादा हइन। एतना गाँहक आवऽ जा हथिन कि खाय भर कमाई हो जा हइन। जिंदगी के गाड़ी कइसहूँ खिंचाइत जाइत हइन।

नईम मास्टर अप्पन गाँव में अकेले मुसलमान हथिन आउ पाँच सौ घर में हिन्दू बसऽ हथिन। लेकिन नईम मास्टर के दिक्कत कहिनो न होयल। गाँव के हरेक हिन्दू भाई इनका से एतना मेल-जोल रखऽ हथिन कि इनका कहिनो न लगल कि ई दूसर धरम के मानेवला हथन। अयोध्या में बाबरी मस्जिद गिरला पर देस भर में दंगा भड़क गेल, तहिनो इनका कुच्छो फरक न पड़ल। ओइसन समय में भी ई सांतिए से रहलन।

लेकिन इनकर पड़ोसी अभय सरमा के इनका ला चिंता सतावे लगल। अभय सरमा सोचे लगलन 'ई बेचारा गाँव भर में अकेले मुसलमान हे। दंगा के माहौल में गाँव के बदमास लोग इनकर पत्ता कहिनो साफ कर दे सकऽ हथ। ई चलते ई मुसलमान के गाँव में चल जयतन हल, तऽ इनका ला ठीक रहतइ हल।'

एक दिन अभय सरमा नईम मास्टर के अप्पन घरे बोलयलन आउ अप्पन दिल के बात कह देलन। ओकरा पर नईम मास्टर कहे लगलन, 'बाबू, हमनी गरीब के दूसर जगह घर खरीदे के औकात थोड़े हइ, इहें रहबइ। जिनका मारे ला होतइ से मार देतथिन।'

अभय सरमा समझयलन, 'देस के माहौल बिगड़ल जाइत हवऽ। कब कहाँ का होतवऽ, से केकरो पता न हे। हम तो तोरे ला कहित हिवऽ। मुसलमानी गाँव में जाके बस जा! जेतना में इहाँ घर बेचबऽ, ओतने में तो उहाँ घर मिल जतवऽ। तनाव के माहौल में भी उहाँ सांति आउ सुकून से रहबऽ।

अभय सरमा के समझयला के अच्छा परभाव नईम मास्टर पर पड़ल आउ कुच्छे महिन्ना के बाद हियाँ के घर बेच के एगो मुसलमानी गाँव अकबरपुर में बस गेलन।

अकबरपुर मुसलमानी गाँव तो जरूर हल बाकि 'हियाँ मस्जिद न हल। मुसलमानी गाँव के नाम पर एगो इदगाह, एगो कब्रिस्तान आउ एगो इमामबाड़ा हल। मस्जिद के जरूरत रहते भर में मस्जिद न बने के कारन हल हियाँ के अमीर मुसलमान के बदमासी। अमीर मुसलमान सोचऽ हलन कि गरीबवन भी उनके जेतना चंदा देवे। गरीबवन ओतना चंदा न दे पावऽ हल आउ अमीरवन बराबर चंदा देवे पर अड़ जा हलन। एकरा पर लड़ाई हो जा हल आउ मस्जिद बने से रह जा हल।

एक बार अकबरपुर में बाहर से एगो मौलाना अयलन। गाँव में मस्जिद न देख के उनका अचम्भा होयल। गाँव में एतना अमीर-अमीर अदमी आउ एगो मस्जिद न, छी: छी:! फिर मौलाना साहब सोचलन कि उनका छी: छी: करे से तो हियाँ मस्जिद बनत न, ई से अब कुछ करे पड़त। एही सोच के मौलाना साहब गाँव भर के मुसलमान के मीटिंग बोलयलन आउ सबके मस्जिद बनावेला तइयार करके अप्पन राह धर लेलन।

मस्जिद बनावेला 'मस्जिद बनाओ कमिटी' के गठन होयल। कमिटी सब पर चंदा बाँधलक। नईम मास्टर पर एक हजार रुपइया चंदा बाँधल गेल। चंदा के रकम सुनके नईम मास्टर के तो जइसे काठ मार देलक। नईम मास्टर जेतना कमा हथन, ऊ खाय से जादे न होवे। मस्जिद बनावे ला ई एक हजार रुपइया चंदा कहाँ से जोगाड़ करतन। कमिटी के सामने गिड़गिड़ाय लगलन, 'हमरा से एतना चंदा न बनत। हम गरीब अदमी ही खाय-पीए से जादे न कमा पावऽ ही।'

कमिटी के सदस्य पुछलन-'तोरा से केतना चंदा बनतवऽ?'

नईम मास्टर बोललन, 'ई गरीब के चंदा माफ कर देवल जाय।'

चंदा माफी के बात सुनके कमिटी के सब सदस्य खिसिया के बम हो गेलन। एक-दू गो सदस्य इनका पर हाथ भी छोड़ देलन। नईम मास्टर आह करके रह गेलन। उनका अप्पन पुरनका गाँव के इयाद आ गेल। हुआँ इनकर अइसन बेइज्जती कहियो न होयल हल।

नईम मास्टर एक बार फिर गिड़गिड़यलन, 'हम चंदा देवे के काबिल न ही सरकार! हमरा चंदा माफ कर देथिन!'

कमिटी पर ई गिड़गिड़यला के कुच्छो परभाव न पड़ल, उल्टे उनका आदेस दे देवल गेल, 'एक महिन्ना के अंदर तोरा एक हजार रुपइया देवे के हवऽ नईम मास्टर! अगर एक महिन्ना के अंदर न दे पयलऽ, तब ठीक न होतवऽ।'

नईम मास्टर के एक-एक दिन पहाड़ जइसन बीते लगल। एक महिन्ना बाद ई कमिटी ओलन का करतन, से सोच-सोच के नईम मास्टर के दिमाग खराब होवे लगल। बाकि दिमाग खराब होवे से का दिन आउ महिन्ना न बीतत?

ठीक एक महिन्ना बीतल कि कमिटी के ढेर मानी सदस्य नईम मास्टर के घरे

पहुँच गेलन। कुछ गड़बड़ होवे के डर नईम मास्टर के कंपिला मजबूर कर देलक। नईम मास्टर के बीबी आउ उनकर लइकन घर के कोना में दुबक गेलन। एगो सदस्य नईम मास्टर के नजदीक आके पुछलक, 'तऽ तोरा से चंदा न बनतइ नईम मास्टर!'

नईम मास्टर से बोलल न गेल, खाली मुड़ी घुमा के 'न' में जवाब देलन। इनकर 'न' के जवाब ऊ सबके खुरफात मचावे ला काफी हल। सब सदस्य मिलके घर के सब सामान गली में फेंक देलन। घर के केंवाड़ी भी तोड़ देलन। नईम मास्टर के जी भर के गाली देलन आउ अप्पन-अप्पन घरे सोझ हो गेलन। नईम मास्टर मने-मन गाली देवे के अलावा कुच्छो न कर पयलन।

नईम मास्टर सोचे लगलन, 'आखिर हम्मर दुस्मन कउन हे? ई गाँव के मुसलमान इया ऊ गाँव के हिन्दू?'

नईम मास्टर के अप्पन दुस्मन के पता चल गेल हल। ऊ अप्पन पुरनका गाँव में फिन से बसेला चल देलन।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक

1. नईम मियाँ के नईम मास्टर काहे कहल गेल हे?
2. नईम मास्टर साम्प्रदायिक न हलन, काहे?

लिखित :

1. अकबरपुर में गाँव भर के मुसलमान के मीटिंग बोलावे के का जरूरत हल?
2. चन्दा के माफी के बात सुन के कमिटी के सदस्य लोग नईम मासटर पर काहे खिसिया गेलन?
3. नईम मास्टर के बीबी आ उनकर घर के लइकन कोना में काहे दुबक गेलन?
4. नईम मास्टर काहे सोचे लगलन कि आखिर हम्मर दुस्मन कउन हे?

5. नीचे लिखल गद्यांस के व्याख्या करऽ:

(क) ''अयोध्या में बाबरी मस्जिद गिरला पर देस भर में दंगा भड़क गेल तहिनो इनका कुच्छो फरक नय पड़ल।''

(ख) ''नईम मास्टर के बीबी आउ उनकर लइकन घर के कोना में दुबक गेलन।''

6. नीचे लिखल के इहाँ एगो गुन हम बता रहली हे, बाकी गुन तू बतावऽ:

(क) नईम मास्टर साम्प्रदायिक न हलन।

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

(च) .....

(छ) .....

7. नईम मास्टर के कहानी के मुख्य भाव बतावऽ।

भासा-अध्ययन :

1. ''नईम मास्टर के दुस्मन'' कहानी के सीर्सक तोरा समझ से आउ का का हो सकऽ हे?

2. नीचे लिखल मुहावरा से वाक्य बनावऽ :—

जिनगी के गाड़ी खींचना, घर में दुबकना, खुरफात मचाना, काठ मार देना।

3. नीचे लिखल सबद से बिसेसन बनावऽ।

देस, समय, चिन्ता, गाँव, दिमाग।

4. कहानी से पाँच गो संज्ञा आउ पाँच गो सर्वनाम चुन के लिखऽ।

5. निम्नलिखित उपसर्ग से एक एक गो सबद बनावऽ:

मु, बद, पु, दु, अ

योग्यता-विस्तार

1. साम्प्रदायिक सद्भाव पर एगो लेख लिखऽ।

2. 'नईम मास्टर के दुस्मन' लेखा कोई कहानी चुन के लावऽ आठ कलास में सुनावऽ।

3. साम्प्रदायिकता पर इस्कूल में एगो गोस्ठी के आयोजन करऽ।

सब्दार्थ:

टेलर	:	दर्जी
गाँहक	:	खरीदार
माहौल	:	बाताबरन
कब्रिस्तान	:	जहाँ लास दफनावल जा हे